

डॉ. अयो अदेवुया , 2 कुरिन्थियों, सत्र 2, 2 कुरिन्थियों 1, अभिवादन, प्रार्थना, धन्यवाद, और यात्रा योजनाएँ

© 2024 आयो एडेवुया और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2, 2 कुरिन्थियों 1, अभिवादन, प्रार्थना, धन्यवाद, और यात्रा योजनाएँ हैं।

हम 2 कुरिन्थियों को देखना शुरू करना चाहते हैं।

हम पाठ से निपटेंगे। आप देखिए, जीवन में कई बार हम गलतफहमी और अविश्वास के रिश्ते में उलझ जाते हैं, जिसमें से निकलने का कोई आसान रास्ता नहीं होता। हम इरादों पर सवाल उठाते हैं, और हम उन लोगों को संदेह का लाभ देने से इनकार करते हैं जिनके साथ हमारी असहमति थी।

माहौल अविश्वास और संदेह से भरा हुआ है। यह हमारे परिवारों में, काम पर या चर्च में हो सकता है। 2 कुरिन्थियों को लिखते समय पॉल खुद को इसी स्थिति में पाता है।

स्थिति को सुधारने के लिए पौलुस क्या कर सकता था? वह इसे कैसे सही करता? उसके पास केवल एक ही विकल्प था और वह विकल्प था कुरिन्थियों को अपने बारे में यथासंभव बेहतर तरीके से समझाना और उनसे समझ और प्रेम की अपील करना। इसलिए, हम दूसरे कुरिन्थियों को देखना शुरू करना चाहते हैं। हम अध्याय 1 को पढ़ने जा रहे हैं। हम अध्याय 1 से शुरू करते हैं। पौलुस, जो मसीह यीशु का प्रेरित है, परमेश्वर की इच्छा से और हमारे भाई तीमुथियुस की ओर से, कुरिन्थ की कलीसिया को, और अखया के भवन में रहने वाले सब पवित्र लोगों को, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

अब मैं उन दो आयतों को पढ़ते हुए यहीं रुकता हूँ। यह जानना हमेशा अच्छा होता है कि पत्र किसने लिखा है। आप देखिए, पत्र की शुरुआत बहुत छोटी है, और यह मुद्दे पर है।

जैसा कि पॉल और उसके पत्रों के साथ प्रथागत है, परिचय हमेशा उन मुद्दों का संकेत देता है जिन्हें पॉल बाद में अपने पत्र में संबोधित करेगा। इसलिए, जब भी आप पॉल का पत्र उठाते हैं, और आप इफिसियों या गलातियों, 1 कुरिन्थियों या रोमियों को पढ़ना चाहते हैं, तो परिचय को पढ़ने और इसके बारे में सोचने के लिए समय निकालें। जब आप परिचय को छोड़कर पत्र के मुख्य भाग में जाते हैं, तो आप पाएंगे कि ऐसे संकेत और मुद्दे हैं जिनके बारे में पॉल ने पहले ही संकेत दे दिया है।

इन मुद्दों को बाद में विस्तार से संबोधित किया जाएगा। पौलुस और कुरिन्थियों के बीच एक समस्या यह है कि कुरिन्थ में कुछ लोगों ने उसके प्रेरित होने पर सवाल उठाया है। इसलिए, वह यह कहकर शुरू करता है कि वह एक प्रेरित के निर्णय या इच्छा से प्रेरित नहीं था।

अब, सुनिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि वह खुद को परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित पौलुस और हमारे भाई तीमुथियुस कहता है। अब, मैं समझाने से पहले कुछ बातें बताना चाहूँगा।

पॉल, ईश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का एक प्रेरित। देखिए, अफ्रीका में हमारे यहाँ एक कहावत है कि आपको उस व्यक्ति से कभी नहीं डरना चाहिए जिसके पास आपको भेजा गया है। केवल उस व्यक्ति से डरो जिसने तुम्हें भेजा है क्योंकि तुम्हारी निष्ठा उस व्यक्ति के प्रति है जिसने तुम्हें भेजा है।

और इसलिए, आपको उस व्यक्ति के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है जिसके पास आपको भेजा गया है। आप जानते हैं क्या? क्योंकि, जैसा कि हम पश्चिम में कहते हैं, जिस व्यक्ति ने आपको भेजा है, वह आपकी पीठ पर है। दूसरे शब्दों में, वह आपके पीछे है।

मुझे याद है कि जब मैं एक युवा था, मेरा मतलब है, एक बहुत ही युवा लड़के के रूप में, आप जानते हैं, युवा लड़के, आपके माता-पिता आपको ऐसी जगह भेजते हैं जहाँ आप नहीं जाना चाहते। आप अपना सिर हिलाते हैं, और आप या तो अपना सिर हिलाते हैं या अपना सिर पीछे की ओर झुकाते हैं। और मैं ऐसा करूँगा।

मैं कहूँगा, ठीक है, मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। यहाँ वापस आओ। तुम मुझसे यहीं मिलो।

या फिर तुम जाने से डरोगी। और पापा कहेंगे, चिंता मत करो, मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। मैं जिम्मेदार हूँ।

और यह जानना बहुत ज़रूरी है कि आपको किसने भेजा है। यह हमेशा बहुत अच्छा होता है। अगर मैं जल्दी से बात करूँ, तो आपको जंगल में मूसा की कहानी याद होगी।

उसे इस्राएल के बच्चों से परेशानी थी, और कभी-कभी वे उसे पत्थर मारने वाले थे। मूसा क्या करता है? मूसा वापस परमेश्वर के पास जाता है, अपने चेहरे के बल लेट जाता है, और कहता है, परमेश्वर, मैं यह चीज़ नहीं चाहता था। आपने मुझे इसके लिए बुलाया है।

और परमेश्वर कहता है, ठीक है, मैंने तुम्हें बुलाया है। वापस जाना हमेशा अच्छा होता है क्योंकि सेवकाई कोई बच्चों का खेल नहीं है। सेवकाई कठिन है।

सेवकाई कठिन है। सेवकाई खतरों से भरी है। और आपको परमेश्वर के पास वापस जाने और यह कहने में सक्षम होना चाहिए कि, परमेश्वर, आपने मुझे भेजा है।

और परमेश्वर कहेगा, हाँ, मैंने तुम्हें भेजा है। लेकिन अगर तुमने खुद को भेजा है, तो यह दूसरी बात है। उसने कहा, पौलुस, मसीह यीशु का प्रेरित, परमेश्वर की इच्छा से, अर्थात् परमेश्वर ने जिस माध्यम से मेरी प्रेरिताई शुरू की है।

दूसरे शब्दों में कहें तो, भगवान ने मुझे बुलाया था। वह उस पद पर निर्वाचित नहीं थे। यह चयन द्वारा नहीं था।

मैं आज ऐसे संप्रदायों को जानता हूँ जहाँ आप पदोन्नति द्वारा प्रेरित बनते हैं। आप पादरी बनते हैं, और फिर अंततः, किसी समय, आप प्रेरित बन जाते हैं। आपका वेतन बढ़ता है और यह सब।

और फिर आप प्रशासक बन जाते हैं। पॉल कहते हैं, नहीं, नहीं, नहीं। मुझे इस पद पर वोट नहीं दिया गया।

मैं चुनाव द्वारा प्रेरित नहीं था। मैं पदोन्नति द्वारा प्रेरित नहीं था। मैं संप्रदायिक शासन या राजनीति के माध्यम से प्रेरित नहीं था।

मैं ईश्वर की इच्छा से प्रेरित हूँ। दूसरे शब्दों में, वह कोरिंथियन चर्च में घुसपैठिया नहीं था। मूल रूप से, वह कोरिंथियन चर्च का संस्थापक था।

वह यीशु मसीह के प्रेरित के रूप में चर्च में आया। इसका मतलब है कि यह ईश्वरीय नियुक्ति है, न कि मानवीय मान्यता। अगर कुरिंथियों ने उसे कम आदर दिया, तो उसने परमेश्वर के सामने एक प्रेरित के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को कम नहीं किया।

और आप इसका निहितार्थ जानते हैं। यदि कुरिंथियों ने पौलुस के प्रेरितिक अधिकार पर सवाल उठाया, तो वे मूल रूप से अपने स्वयं के ईसाई अस्तित्व की नींव खोद रहे थे क्योंकि उसने उन्हें मसीह के पास पहुँचाया था। और यदि उसने उन्हें मसीह के पास पहुँचाया, और अब वे पौलुस के प्रेरितिक अधिकार पर सवाल उठा रहे हैं, तो वे उस नींव पर सवाल उठा रहे हैं जिस पर उनका अपना ईसाई जीवन बना हुआ है।

और ऐसा करना कोई बुद्धिमानी वाली बात नहीं है। क्योंकि अगर पॉल झूठा था, तो इसका मतलब है कि उनका विश्वास झूठा है। अगर पॉल गलत था, तो इसका मतलब है कि उनका विश्वास गलत है क्योंकि वही एक था।

और पॉल कहते हैं, मैं मनुष्य की इच्छा से नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा से प्रेरित हूँ। और यहाँ, आप देखिए, पूरी किताब एक प्रेरित के रूप में पॉल की ईमानदारी के बारे में है, जो उस कथन को बहुत महत्वपूर्ण कथन बनाता है। क्योंकि किताब उसकी ईमानदारी के बारे में बात करती है।

उन्हें वोट देकर पद पर नहीं बिठाया गया था। उन्हें पद के लिए होड़ करके प्रेरित नहीं बनाया गया था। वे राजनीतिक चालों से प्रेरित नहीं बने थे।

उन्होंने इसे करियर के तौर पर नहीं चुना। बिल्कुल नहीं। उनकी ईश्वर से एक अविस्मरणीय मुलाकात हुई, जिसने उन्हें इस मुकाम पर पहुँचाया।

और यह मुलाकात हर उस मंत्री के लिए ज़रूरी है जिसे सेवा में बुलाया जाता है। अब, आपको दमिश्क रोड पर जाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आप परमेश्वर के साथ उस मुलाकात का अनुभव कर सकते हैं। उन्होंने इसे करियर के तौर पर नहीं चुना।

उसके साथ एक अविस्मरणीय मुलाकात हुई जिसने उसे वहाँ पहुँचा दिया। परमेश्वर के प्रेरितों के रूप में, परमेश्वर ही पौलुस के सभी कार्यों का अंतिम न्यायाधीश है। वह पहचानता है कि परमेश्वर ही अंतिम न्यायाधीश है।

और अब, हम यहाँ आते हैं, वह संतों से कहता है, परमेश्वर की कलीसिया से जो कुरिन्थ में है, जिसमें अखाया के सभी संत शामिल हैं। अब, इससे पहले कि मैं उस पर जाऊँ, क्या यह दिलचस्प नहीं है कि पौलुस ने वहाँ तीमुथियुस का नाम रखा है? बेशक, यह किसी बिंदु पर समाप्त हो जाता है। हम अब ऐसा नहीं सुनते, लेकिन कम से कम उसने अपना नाम वहाँ रखा है।

अब, यह महत्वपूर्ण क्यों है? पॉल को इस बात का डर नहीं था कि तीमुथियुस पीछे हटेगा या नहीं, और इसलिए, पत्र बेकार हो जाएगा। मुझे कई साल पहले एक पादरी की बात याद है जिसने किसी और के साथ एक किताब लिखी थी, लेकिन उसके बाद, किसी और व्यक्ति के साथ फिर से कोई किताब नहीं लिखी, और वे कहते हैं, अगर वह व्यक्ति पीछे हट गया तो क्या होगा? अब, आपको किसी और के बारे में सबसे बुरा क्यों मानना चाहिए? अगर आप खुद पीछे हट गए तो क्या होगा? तो, फिर, आपके लेखन का क्या होगा? लेकिन पॉल के पास ऐसा दिमाग नहीं था। वह अपने नाम में तीमुथियुस को शामिल करने में सक्षम था।

क्या मैं इस बारे में थोड़ा बात कर सकता हूँ? पॉल भी हमें सहयोग के महत्व को दर्शाता है। पॉल इस बात पर ध्यान नहीं देता था कि श्रेय कौन लेगा। आप जानते हैं, आजकल छात्रवृत्ति में ऐसा बहुत कम होता है।

क्या एक व्यक्ति चाहता है कि हर कोई उसे जाने? नहीं। यह बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक टीमवर्क है।

पॉल टीम के सदस्य के रूप में काम को महत्व देता है। टीम के सदस्य के रूप में उसका काम। इसलिए, वह तीमुथियुस का उल्लेख करता है।

फिर, वह कोरिंथियन लोगों को संत कहता है। वाह। आप खुद से पूछते हैं, कोरिंथ में संत? संतों को पाना कितना असंभव स्थान है।

आप देखिए, हम आजकल संत शब्द का इस्तेमाल कई तरह से करते हैं। आपको यहां-वहां संत मिल जाएंगे। फिलीपींस में हम उन्हें रेबोल्टोस कहते हैं।

ये मूर्तियाँ, ये छोटे-छोटे संत। और, ज़ाहिर है, एक ख़ास संप्रदाय में, हर चीज़ के लिए संत होते हैं। उनके पास धूम्रपान के लिए संत होते हैं।

उनके पास चोरी करने के लिए संत हैं। उनके पास व्यभिचार करने के लिए संत हैं। हम जिस संत की बात कर रहे हैं, वह यह नहीं है।

दूसरी जगह पर संत हैं। क्या आप मरने के बाद संत बन गए? नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। पॉल कहते हैं कि ये जीवित संत हैं।

वह उन्हें संत कहते हैं। हम आज संत शब्द का इस्तेमाल करते हैं। हमें लगता है कि यह कुछ अति आध्यात्मिक लोगों को लगता है।

उन लोगों के बजाय जो मसीह यीशु में भरोसे के रिश्ते से अलग हो गए हैं। तो फिर, संत कौन है? और संत होने का क्या मतलब है? आप देखिए, नंबर एक, संत या संत शब्द, ग्रीक में होई एगियोई, बहुवचन है। और मेरी बात बहुत ध्यान से सुनिए।

पॉल इस शब्द का प्रयोग एकवचन में नहीं करता है। वह इसे बहुवचन में प्रयोग करता है। नए नियम में एजियोई का उल्लेख हमेशा बहुवचन में होता है।

होई अगियोई। यानी संत एक साथ मिलकर एक समुदाय बनाते हैं। इससे हमें कुछ पता चलता है।

यह मसीह में सभी विश्वासियों को संदर्भित करता है, न कि कुछ चुनिंदा लोगों को। आप इसे रोमियों अध्याय 1, पद 7 में देखते हैं। यह 1 कुरिन्थियों अध्याय 1, पद 2 में है। 2 कुरिन्थियों अध्याय 2, पद 1 में। इफिसियों अध्याय 1, पद 1 में। फिलिपियों अध्याय 1, पद 1 में। और, कुलुस्सियों अध्याय 1 पद 2 में। वह उन्हें संत कहता है। तो फिर हमें संत क्यों कहा जाता है? हमें मसीह के साथ हमारे रिश्ते के कारण संत कहा जाता है।

इसी तरह, इस्राएल को परमेश्वर का पवित्र लोग कहा जाता था। अब, इसके बारे में थोड़ा सोचिए। परमेश्वर के पवित्र लोगों, आप जानते हैं कि उन्होंने मरीबा में कैसे लड़ाई लड़ी।

वे हर समय बड़बड़ाते रहते हैं। वे हर समय शिकायत करते रहते हैं। हर बार जब पीने के लिए पानी नहीं होता, तो वे शिकायत करते हैं।

वे शिकायत करते हैं कि खाने के लिए कुछ नहीं है। और फिर उन्होंने मन्ना के बारे में शिकायत की। उन्होंने कहा कि स्वर्गदूतों का खाना तृप्त नहीं करता।

मेरा मतलब है, आप इस्राएल के बच्चों के बारे में बात करते हैं जिन्हें पवित्र लोग कहा जाता है। फिर आप खुद से पूछते हैं, उस बिंदु पर पवित्रता का क्या अर्थ है? मैं इसे अलग-अलग तरीकों से देखूंगा। यह पवित्रता है अपनेपन के अर्थ में।

वे ईश्वर के हैं। ईश्वर के साथ उनके रिश्ते के कारण, उनके अलग होने के कारण, उन्हें संत, पवित्र लोग कहा जाता है। मसीह के साथ हमारे रिश्ते के कारण विश्वासियों को संत कहा जाता है।

इस प्रकार, संतत्व किसी व्यक्ति को मृत्यु के बाद किसी विशेष कार्य के कारण प्रदान किया जाने वाला दर्जा नहीं है। आप मृत्यु के बाद अपने किसी विशेष कार्य के कारण संत नहीं बन जाते। और फिर, संत शब्द, हालांकि मुख्य रूप से रिश्तों को दर्शाता है, लेकिन इसका तात्पर्य जीवन के नैतिक तरीके से है जो उन लोगों से अपेक्षित है जिन्हें संत का दर्जा दिया गया है।

दूसरे शब्दों में, अगर ईश्वर ने हमें संत बनने के लिए बुलाया है, तो हमें अपना जीवन उसी तरह जीना चाहिए। अगर आपको डेविड बेन-गुरियन की कहानी याद है, जो पहले इजरायली प्रधानमंत्री थे, तो वे किसी से बात कर रहे थे, और उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा, उसने कहा, क्या कोई ईसाई है? उसने कहा कि मैंने बाइबल पढ़ी है। क्या ऐसे लोग हैं जो इस पर विश्वास करते हैं? और उपदेशक ने उससे कहा, हाँ, मैं करता हूँ।

उन्होंने पूछा कि क्या उनके जैसे और भी लोग हैं। वे कहाँ हैं? मैं उन्हें नहीं देख सकता। या आपको महात्मा गांधी की कहानी याद है, जो एक मिशनरी से बात कर रहे थे और उन्होंने कहा, और उस व्यक्ति ने कहा, क्या आप विश्वास करते हैं, मेरा मतलब है, क्या आप इन शास्त्रों पर विश्वास करते हैं? और उपदेशक महात्मा गांधी से कह रहा था, उसने पूछा, आप किसी व्यक्ति या व्यक्ति को इतना पसंद क्यों करते हैं और आपको ईसाई धर्म पसंद नहीं है? और महात्मा गांधी ने कहा, यही समस्या है। मुझे आपका मसीह पसंद है।

मुझे ईसाई पसंद नहीं हैं क्योंकि उनमें बहुत कुछ ऐसा है जो मसीह से अलग है। मुझे आपका मसीह पसंद है, लेकिन मुझे ईसाई पसंद नहीं हैं क्योंकि उनमें बहुत कुछ ऐसा है जो मसीह से अलग है। दूसरे शब्दों में, किसी पेशे में, विश्वास और व्यवहार के बीच एक अंतर होता है, विश्वसनीयता का अंतर होता है।

और पॉल उन्हें कहते हैं कि आप संत हैं, और ईश्वर के संत के रूप में, हमें ईश्वर के प्रेम को प्रतिबिंबित करना है, हमें ईश्वर के जीवन को प्रतिबिंबित करना है, हमें अपने जीवन में ईश्वर की पवित्रता को प्रतिबिंबित करना है। मुझे वह गीत याद है जो हम गाते थे, यीशु की सुंदरता मुझमें दिखाई दे। सब कुछ अद्भुत जुनून और पवित्रता है, तुम सब आत्मा दिव्य हो, मेरा सारा स्वभाव परिष्कृत है, जब तक कि यीशु की सुंदरता मुझमें दिखाई न दे।

मैं परमेश्वर के लिए संत बनना चाहता हूँ। संत शब्द का तात्पर्य जीवन के नैतिक तरीके से है जिसकी अपेक्षा उन लोगों से की जाती है जिन्हें तथाकथित संत कहा जाता है। इसलिए, उसने सभी संतों के साथ कहा जो पूरे अखाया में हैं, जो दर्शाता है कि पौलुस का इरादा था कि उसके पत्र कलीसियाओं में फैलें।

यह पत्र सिर्फ कुरिन्थ शहर के मसीहियों के लिए ही नहीं था, बल्कि उस क्षेत्र के सभी मसीहियों के लिए था जो इस पत्र को पढ़ सकते थे। संबोधन के बाद जो अभिवादन किया गया वह पौलुस का सामान्य अभिवादन है। वह अपने पाठकों के लिए अनुग्रह और शांति की कामना करता है।

आप जानते हैं, कभी-कभी आप सोचते हैं कि आज हम एक दूसरे का अभिवादन कैसे करते हैं। हमारे अभिवादन का कोई मतलब नहीं है। नमस्ते, नमस्ते। नमस्ते का क्या मतलब है? खैर, यह नमस्ते है, मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है।

हाय बस यही है, या तो हाय वहीं रहो या हाय यहाँ मत आओ। लेकिन पॉल इसे अनुग्रह और शांति के साथ स्वागत करता है। यह बहुत ही धार्मिक है।

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले। अनुग्रह वह है जिसके द्वारा हमें क्षमा किया जाता है, और शांति परमेश्वर के साथ हमारे मेल-मिलाप का परिणाम है। वहीं, पौलुस परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह के बीच के रिश्ते के बारे में बात करता है।

आप इसे हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शांति के रूप में पढ़ सकते हैं। पिता और पुत्र दोनों ही अनुग्रह और शांति के स्रोत हैं, और ये विश्वासियों को दिए जाते हैं। और फिर वह उन्हें लिखना शुरू करता है।

अब पद 3 से पढ़ते हुए उन्होंने कहा, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है, जो सब क्लेशों में हमें शान्ति देता है, ताकि हम भी उन लोगों को शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों, और उस शान्ति के द्वारा जो परमेश्वर हमें शान्ति देता है। जिस प्रकार मसीह के कष्ट हमारे लिए बहुत हैं, उसी प्रकार मसीह के द्वारा हमारी शान्ति भी बहुत है। यदि हम कष्ट पाते हैं, तो यह तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिए है।

यदि हमें सांत्वना दी जा रही है, तो यह आपकी सांत्वना के लिए है, जिसे आप तब अनुभव करते हैं जब आप उन्हीं कष्टों को धैर्यपूर्वक सहन करते हैं जो हम भी झेल रहे हैं। आपके लिए हमारी आशा अटल है, क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे आप हमारे कष्टों में भागीदार हैं, वैसे ही आप हमारी सांत्वना में भी भागीदार हैं। हम नहीं चाहते कि आप, भाइयों और बहनों, एशिया में हमारे द्वारा अनुभव किए गए कष्टों से अनजान रहें।

क्योंकि हम इतने बुरी तरह से कुचले गए थे कि हम जीवन से ही निराश हो गए थे। वास्तव में, हमें लगा कि हमें मौत की सज़ा मिली है ताकि हम खुद पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर भरोसा करें, जो मरे हुआ को ज़िंदा करता है। जिसने हमें इतने घातक संकट से बचाया है, वह हमें बचाना जारी रखेगा।

हमने उस पर अपनी आशा रखी है कि वह हमें फिर से बचाएगा। आप भी हमारी प्रार्थनाओं के माध्यम से हमारी मदद करने में शामिल हों ताकि बहुत से लोग हमारी ओर से उस आशीर्वाद के लिए धन्यवाद दें जो हमें बहुतों की प्रार्थनाओं के माध्यम से दिया गया है। अब, पौलुस लिखना शुरू करता है, और वह उनसे उन कष्टों के बारे में बात करना शुरू करता है जिनसे वह गुज़रा था।

पहली बात जो आप देखेंगे वह यह है। पौलुस अपने सामान्य तरीके से धन्यवाद और प्रार्थना करने से अलग हट जाता है। आम तौर पर, अपने पत्रों में, पौलुस विश्वासियों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है।

वह यही करता है। लेकिन 2 कुरिन्थियों अध्याय 1, पद 3 में वह इसे उलट देता है। वह कहता है, परमेश्वर धन्य हो। पौलुस ने पत्र की शुरुआत परमेश्वर की स्तुति से की, जिसने उस पर इतनी दया और सांत्वना दिखाई है।

इस विशेष अंश में बहुत कुछ है; आप देख सकते हैं कि पौलुस ने इस विशेष पुस्तक और इस विशेष खंड में पीड़ा के बारे में बहुत सी बातें कही हैं। पौलुस इस अंश में सांत्वना या आराम के बारे में बात करता है। मेरा मतलब है, इस शब्द के पीछे का विचार हमेशा सुखदायक सहानुभूति से कहीं ज्यादा होता है।

इसमें मज़बूती देने, मदद करने, मज़बूत बनाने का विचार है। इसलिए, पौलुस दुख के बीच ईश्वरीय प्रोत्साहन के लिए परमेश्वर की स्तुति करता है। और यह देखना बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जब पौलुस दुख के बारे में बात करता है, तो वह कहता है कि दुख विश्वासियों के लिए है, जो बहुत महत्वपूर्ण है।

इसे फिर से देखें। ताकि हम उन लोगों को सांत्वना दे सकें जो दुःख में हैं, उसी सांत्वना से जिससे परमेश्वर हमें सांत्वना देता है। और पौलुस अपने दुःखों के बारे में बात करना शुरू करता है।

और यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि आपको 2 कुरिन्थियों में पीड़ा के लिए पॉल द्वारा इस्तेमाल किए गए बहुत से शब्द मिलेंगे। वह पास्कल शब्द का इस्तेमाल करता है, और वह ग्रहण शब्द का इस्तेमाल करता है। यह दिलचस्प है कि जब आप पॉल की भाषा को देखते हैं, तो पीड़ा के लिए इस्तेमाल किए गए अलग-अलग शब्दों की कम से कम 29 घटनाएँ होती हैं।

और दिलचस्प बात यह है कि अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो पैराक्लेसेस और सांत्वना के 58 उदाहरण हैं। तो, हर अवसर के लिए, हर दुख के उल्लेख के लिए, दुगना सांत्वना है। कठिनाई, दुःख और परीक्षण के हर उल्लेख के लिए, दुगना सांत्वना है।

यह हमारे लिए एक प्रोत्साहन होना चाहिए। और यहाँ पौलुस ने लोगों के लिए जो दुख सहे उसके बारे में कहा है। इसे पद 5 में देखें। क्योंकि जैसे मसीह के दुख हमारे लिए बहुत हैं, जब वह मसीह के दुखों के बारे में बात करता है, तो वह वही दुख है जो उसने मसीह के लिए सहा था।

जैसे मसीह का दुख हमें छोड़ देता है, वैसे ही मसीह के द्वारा हमारी सांत्वना भी हमें छोड़ देती है। और फिर वह एक कथन कहता है। अगर हम पीड़ित हैं, तो यह आपकी सांत्वना के लिए है।

और मैं चाहता हूँ कि आप कुछ समय के लिए वहाँ रुकें। यदि आप पीड़ित हुए हैं, यदि हम पीड़ित हुए हैं, तो यह आपकी सांत्वना के लिए है। आप जानते हैं कि यहाँ क्या होता है? पॉल खुद को एक बलिदान के रूप में देखता है।

बाद में, वह दुख की सुगंध के बारे में बात करने जा रहा है। वह दुख की सुगंध के बारे में बात करता है, मेरा मतलब है, अध्याय 2 में। वह इसके बारे में बात करता है। अध्याय 2 को देखें। आइए अध्याय 2, श्लोक 14 को देखें।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो मसीह में हमें सदैव विजय की ओर ले जाता है और हमारे द्वारा अपने ज्ञान की सुगन्ध हर जगह फैलाता है, क्योंकि हम ही वह सुगन्ध हैं। यह बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है।

वह ग्रीक में ओसमेन या ओसमेन के बारे में बात करता है यूडेस । मैं आपको उत्पत्ति में वापस ले चलता हूँ। आप उस वाक्यांश का पहला उल्लेख देखते हैं, ओसमेन नूह के प्रसाद में, यूडेस ।

जल प्रलय के बाद, नूह ने एक बलिदान चढ़ाया जो परमेश्वर को प्रसन्न करता था। यह उस्मान था यूडेस , एक बलिदान जो परमेश्वर को स्वीकार्य है। फिर, आप लैव्यव्यवस्था में जाते हैं और उन भेंटों को देखना शुरू करते हैं जो परमेश्वर को चढ़ाई जाती थीं।

और सेप्टुआजेंट में वही भाषा ओसमेन है यूडेस , एक बलिदान, बलिदान की भेंट। इसलिए, पॉल ने अपने जीवन को बलिदान के रूप में समझा। यह पीड़ा है, यह बलिदान है, यह एक तरह से पीड़ा है।

अब सुनिए, मेरी बात ठीक से सुनिए। पॉल अपने दुख को एक तरह से मुक्ति के रूप में देखता है। जब मैं एक तरह से मुक्ति की बात करता हूँ, तो मैं मसीह को पॉल के दुख के समान स्तर पर रखने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।

हम ऐसा नहीं कह रहे हैं। लेकिन पॉल कहते हैं कि मैं सिर्फ एक अपराधी की तरह कष्ट नहीं उठा रहा हूँ। मैं कुछ लोगों को मसीह के बारे में बताने के उद्देश्य से कष्ट उठा रहा हूँ।

और इसलिए , इस अर्थ में, उसकी पीड़ा का मूल्य है। यह मुक्तिदायक है, यह बलिदानपूर्ण है, यह मिशनरी है। यह इसलिए पीड़ा नहीं है क्योंकि वह सिर्फ एक बदमाश था या इसलिए कि वह अप्रिय बनना चाहता था।

यह बात नहीं है, बिल्कुल नहीं। उसने कहा कि मैंने तुम्हारे लिए कष्ट सहे। अगर हम कष्ट सहते हैं, तो यह तुम्हारी सांत्वना और मुक्ति के लिए है।

क्या आप इसे देख सकते हैं? यह आपकी सांत्वना और उद्धार के लिए है। उसने कहा कि हमें सांत्वना मिलती है। पौलुस दुख के बीच में ईश्वरीय प्रोत्साहन के लिए परमेश्वर की स्तुति करता है।

दुख सहना मसीही जीवन का एक ज़रूरी हिस्सा है। और यह हमें यह देखने में मदद करता है कि परमेश्वर हमारी रोज़मर्रा की ज़रूरतों को कैसे पूरा करता है। हमें सांत्वना दी जाती है ताकि हम दूसरों को सांत्वना देने के लिए सशक्त हो सकें।

अब, फिर से इस पर वापस आते हैं। यह लोगों के लिए है। यह सांप्रदायिक है।

परमेश्वर की सांत्वना दूसरों के माध्यम से दी और प्राप्त की जा सकती है। यही बात पॉल लोगों को बताने की कोशिश कर रहा है। एक टिप्पणीकार, एडम क्लार्क, इसे इस तरह से कहते हैं।

बुरे आध्यात्मिक सुख हमें सिर्फ हमारे इस्तेमाल के लिए नहीं दिए गए हैं। वे ईश्वर के उपहारों की तरह हैं। उन्हें दूसरों को वितरित करने या उनकी मदद करने का साधन बनने का अवसर दिया जाता है।

जब हम कष्ट सहते हैं, तो हम दूसरों के लिए कष्ट सहते हैं। और जब हमें सांत्वना मिलती है, तो हमें सांत्वना सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों को आशीर्वाद देने के लिए मिलती है। दूसरे शब्दों में, एक पादरी की परीक्षाएँ और सांत्वनाएँ चर्च के लाभ के लिए अनुमत और भेजी जाती हैं, न कि सिर्फ आपके व्यक्तिगत लाभ के लिए।

मेरे बहुत करीब रहने वाले एक व्यक्ति ने हमेशा यह कथन कहा है कि अगर ईश्वर इसकी अनुमति देता है, तो वह इसका उपयोग करेगा। अगर ईश्वर इसकी अनुमति देता है, तो वह इसका उपयोग करेगा। अगर ईश्वर आपको कष्ट सहने की अनुमति देता है, तो वह इसका उपयोग करेगा।

उसके पास इसके लिए एक कारण है। आप देखिए, घमंड हमेशा हमें दूसरों के सामने अपनी ज़रूरतें प्रकट करने से रोकता है। इसलिए, हमें दूसरों से कभी भी आराम नहीं मिलता।

मेरा मतलब है, कई मंत्री आना चाहेंगे, ठीक है, नहीं, आपने सब ठीक समझा। मंत्रियों को कोई समस्या नहीं है। सब कुछ ठीक है।

सब कुछ भव्य और बढ़िया है। यह दिखावा है। यह सच नहीं है।

लेकिन दूसरों से मिलने वाली पीड़ा और सांत्वना आपके लिए आशीर्वाद हो सकती है। वह कितना दुखी प्रचारक होगा, जिसके पास अध्ययन और सीखने से सारी दिव्यता है और अनुभव से कुछ भी नहीं। वह एक दुखी प्रचारक है।

आपके पास अध्ययन से सब कुछ है लेकिन अनुभव से कुछ भी नहीं। आप जानते हैं, बहुत से लोग सुसमाचार प्रचार पर किताबें लिख रहे हैं, फिर भी वे किसी आत्मा को मसीह की ओर नहीं ले जा सकते। बहुत से लोग विवाह के बारे में पढ़ रहे हैं, और आप कभी विवाहित नहीं हुए।

मेरा मतलब है, कहानी बहुत अच्छी है। तो, आप किसी ऐसी चीज़ के बारे में कैसे जानते हैं जिससे आप कभी नहीं गुज़रे? सेवकाई में भी यही बात लागू होती है। जब हम कष्ट सहते हैं, तो परमेश्वर हमें दूसरों के लिए और उनके आराम के लिए अपने कष्ट का उपयोग करने की अनुमति देता है।

क्योंकि पौलुस के दुख मसीह के दुख थे, इसलिए यीशु पौलुस से दूर नहीं था। उसके दुखों में, यीशु हमेशा उसके करीब था। आप जानते हैं, इसीलिए जब आप जेल के पत्रों को देखेंगे, तो वह हमेशा खुद को पौलुस, मसीह का कैदी कहेगा।

हाँ, क्या यह मसीह था जिसने उसे जेल में डाला? पॉल कहते हैं, ठीक है, हाँ, आखिरकार अल्लाह ने ही उसे जेल में डाला। यह राजनीतिक नेता थे जिन्होंने उसे जेल में डाला। यह धार्मिक नेता थे जिन्होंने लोगों को भड़काया और उन्होंने उसे जेल में डाला।

लेकिन उसने साधनों से परे देखा, और उसने अंतिम चीज़ देखी: परमेश्वर। मैं जेल में हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा हूँ, और परमेश्वर इसकी अनुमति देता है। इसीलिए जब आप पॉल और सीलास के रात में गाने के बारे में सुनते हैं तो आप देखते हैं कि पॉल रात में गा सकता था।

क्या जेल में भी जागृति आई? हाँ, क्योंकि वे जानते थे कि वे परमेश्वर की इच्छा से वहाँ थे। वह वहीं था। वह जानता था कि मसीह वहीं था, उसके साथ पहचान कर रहा था, उसे सांत्वना दे रहा था।

दूसरे शब्दों में, पौलुस के दुख में परमेश्वर का उद्देश्य, पौलुस पर चलने से कहीं बड़ा था। परमेश्वर पौलुस के दुखों के माध्यम से दूसरों को सांत्वना और उद्धार दे रहा था। आप जानते हैं क्या? पौलुस का जीवन स्वयं पर नहीं, बल्कि प्रभु पर, उन लोगों पर केंद्रित है जिन्हें प्रभु ने उसे सेवा करने के लिए दिया है।

जब पौलुस कष्ट सहता है, तो ऐसा इसलिए होता है ताकि परमेश्वर कुरिन्थ के मसीहियों के जीवन में कुछ अच्छा कर सके। उसका दिलासा उनके लिए आशीर्वाद और प्रोत्साहन का एक साधन माना जाता है। दुख सहना या दिलासा पाना, यह सब पौलुस के बारे में नहीं था।

यह सब दूसरों के बारे में था, पॉल के बारे में नहीं। आप जानते हैं, हमारे बच्चों के संडे स्कूल में गाया जाता था, खुशी, खुशी, इसका यही मतलब है, यीशु पहले, आप अंत में, दूसरे बीच में। इसलिए, अगर आप खुशी पाना चाहते हैं, तो पहले यीशु, अंत में आप, बीच में दूसरे होना चाहिए।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि कई ईसाईयों को खुशी क्यों नहीं मिलती? क्योंकि वे क्रम को उलट देते हैं। यह YOI या YOI है, जिसका मैं उच्चारण नहीं कर सकता। मुझे नहीं पता कि इसका क्या मतलब है, और अगर मुझे नहीं पता, तो इसका मतलब है कि आपको भी नहीं पता, और शायद यही वजह है कि कई विश्वासियों को खुशी नहीं मिलती। यह सिर्फ हमारे बारे में नहीं है, बल्कि यह दूसरों के बारे में भी है।

दुख या सांत्वना, यह सब पॉल के बारे में नहीं था ; यह सब दूसरों के बारे में था। गौरतलब है कि, आप जानते हैं, पॉल ने भी यही दुख कहा है। यह असंभव है कि कोरिंथियन मसीही भी ठीक उसी तरह से पीड़ित थे जिस तरह से पॉल ने किया था।

मेरा मतलब है, देखिए वह क्या कहता है। उसने वही पीड़ा कही, लेकिन वे शायद एक ही तरह से पीड़ित नहीं हैं। संभवतः उनमें से कोई भी 2 कुरिन्थियों अध्याय 11, आयत 23 से 28 में पौलुस द्वारा झेली गई पीड़ाओं से मेल नहीं खा सकता, फिर भी पौलुस कह सकता है कि वे एक ही पीड़ा हैं।

आप देखिए, आपको यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि, ठीक है, आप पीड़ित हैं; हम अपने दुखों का वजन नहीं तौलते। मैं आपसे ज़्यादा पीड़ित हूँ; आप मुझसे ज़्यादा पीड़ित हैं। ईश्वर आपकी भार सीमा जानता है; वह मेरी भार सीमा जानता है और इसलिए मुझे उससे ज़्यादा उठाने की अनुमति नहीं देता जितना मैं उठा सकता हूँ, और वह आपको उससे ज़्यादा उठाने की अनुमति नहीं देता जितना आप उठा सकते हैं।

इसलिए, हमें अपने दुखों की तुलना एक दूसरे से करने की ज़रूरत नहीं है और यह नहीं कहना चाहिए कि, मेरा दुख बड़ा है, तुम्हारा दुख बड़ा है, एक सबसे बड़ा है। नहीं, यह एक ही तरह की तकलीफ़ें हैं। उन्होंने कहा कि आप एक ही तरह की तकलीफ़ें झेलते हैं।

आप जानते हैं, पौलुस ने उनकी पीड़ा को कम नहीं किया। आज प्रचारक कहेंगे, अच्छा, क्या इसीलिए तुम निराश हो? यह एक छोटी सी बात है। पौलुस बस इतना कह सकता था, यह एक छोटी सी बात है जिससे तुम्हें परेशान नहीं होना चाहिए।

क्या यही कारण है कि आप छोड़ना चाहते हैं? क्या यही कारण है कि आप हार मान लेना चाहते हैं? पॉल ऐसा नहीं कहता। पॉल कहता है, हाँ, आप उसी स्थिति से नहीं गुज़र रहे हैं जिससे मैं गुज़र रहा हूँ, लेकिन आपका दुख परमेश्वर के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना मेरा अनुभव परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है। आपका अनुभव परमेश्वर के सामने उतना ही वैध है जितना मेरा अनुभव वैध है; भले ही हम जो दुख के अनुभव कर रहे हैं, जब हम उनकी तुलना करते हैं तो वे एक जैसे नहीं होते, फिर भी वे परमेश्वर के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

इसलिए, मंत्रियों के रूप में, हमें लोगों की कठिनाइयों को कम करने के तरीके के बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है। मैं यह नहीं कहता कि इसका मतलब यह है कि वे परिपक्व नहीं हैं। नहीं, नहीं, नहीं, नहीं।

ऐसा नहीं है। हम पॉल से सीखते हैं। आप जानते हैं, मैंने आपको परिचय में बताया था कि यदि आप पादरी पत्र को देखना चाहते हैं, तो यह पुस्तक आपके लिए है।

इसलिए, यदि आप चाहें, तो आप यह नहीं जानना चाहेंगे कि परामर्श कैसे दिया जाता है। आप 2 कुरिन्थियों में आँ और देखें कि पौलुस ने किस तरह से यह किया। पौलुस कह सकता है कि वे एक ही तरह की पीड़ा हैं। वह पहचानता है कि पीड़ा की सटीक परिस्थितियाँ उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं जितनी कि परमेश्वर क्या कर रहा है और पीड़ा के माध्यम से परमेश्वर क्या करना चाहता है।

एक अर्थ में हम सभी एक ही तरह की पीड़ाँ झेलते हैं। आप देखिए, नए नियम में पीड़ा का विचार बहुत व्यापक है और यह सिर्फ़ एक तरह की परेशानी, यानी उत्पीड़न तक सीमित नहीं है। आइए आयत 8 से 11 में इसे फिर से पढ़ें।

हम नहीं चाहते कि आप एशिया में हमारे द्वारा अनुभव की गई पीड़ा से अनजान रहें, क्योंकि हम इतने बुरी तरह से कुचले गए थे कि हम जीवन से ही निराश हो गए थे। आप अच्छे नेतृत्व की निशानी देख सकते हैं। यहाँ कमजोरी है।

पॉल ने अपने श्रोताओं के सामने खुद को संवेदनशील बनाया और कहा, देखो, हम इससे गुज़रे हैं। हम इसी से गुज़रे हैं, और हम जानना चाहते थे। उन्होंने कहा कि हम जीवन से भी निराश हो गए हैं, जिसका मतलब है कि अगर यह संभव होता, तो हम मर जाते।

अब, कुछ लोग पॉल के बारे में बात करेंगे कि वह बात नहीं कर रहा है; वे नैदानिक अवसाद के बारे में बात करेंगे। पॉल यहाँ नैदानिक अवसाद के बारे में बात नहीं कर रहा है। पॉल बात नहीं कर रहा है। ओह, हम बहुत उदास हैं।

यह अवसाद के बारे में बात नहीं कर रहा है क्योंकि मसीह हमारे करीब था। लेकिन उसने कहा कि यह बहुत ज़्यादा है कि हमें लगा कि हमारे लिए मर जाना भी बेहतर है। यह पॉल है।

मेरी बात सुनो। यह प्रेरितों का सबसे बेहतरीन उदाहरण है। उन्होंने कहा कि हम जीवन से भी निराश हो गए थे क्योंकि यह असहनीय होता जा रहा था।

हम इतने हताश हो गए थे कि हम जीवन से ही निराश हो गए थे। यही उन्होंने कहा था। इसलिए कभी-कभी हम जीवन में इस स्थिति से गुजरते हैं, और दुश्मन फुसफुसाता है, ठीक है, शायद तुम अब ईसाई नहीं हो।

यह सच नहीं है। शैतान यह तय नहीं करता कि मैं ईसाई हूँ या नहीं। मैं जानता हूँ कि मैं ईसाई हूँ।

आपको यह जानना होगा कि जब आप दुख से गुज़र रहे होते हैं, और दुश्मन आपके लिए कुछ होता है, तो आपको पता होता है कि उसे कैसे जवाब देना है। उन्होंने कहा कि हम जीवन से निराश हो गए थे। हम इतने बुरी तरह से कुचले गए थे, असहनीय रूप से।

उसने कहा, वास्तव में, हमें लगा कि हमें मृत्यु की सजा मिली है, इसलिए हम खुद पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर भरोसा करेंगे, जो मरे हुए को जिलाता है। वह हमें इतनी घातक बीमारी से बचाएगा और हमें बचाता रहेगा। तो, वह क्या करता है? आयत 8 से 11 में, पौलुस बिना किसी विस्तार के उन कष्टों का उल्लेख करता है जो उसने और उसके साथियों ने अनुभव किए थे।

सुनो, पौलुस ने अपनी परीक्षाओं का कोई प्रदर्शन नहीं किया। नहीं।

कुरिन्थियों को उन परीक्षाओं के बारे में पता था जिनके बारे में उसने बात की थी, और उसे खुद को लोकप्रिय बनाने के लिए विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं थी। कभी-कभी, जब हम गवाही देते हैं, तो हम इसे इस तरह से कर सकते हैं कि ध्यान हम पर हो न कि उद्धारकर्ता परमेश्वर पर। पौलुस ऐसा नहीं करने जा रहा है।

पॉल कहते हैं, आप जानते हैं। आप परीक्षण के बारे में जानते हैं। उसे लगा कि उस पर मौत की सज़ा है, खुद पर मौत की सज़ा, लेकिन वह मुक्ति देखता है, और वह अपनी मुक्ति के लिए पुनरुत्थान की भाषा का उपयोग करता है।

पॉल कह रहा है कि परमेश्वर ने हमें छीन लिया। परमेश्वर ने हमें छीन लिया। आप परीक्षण के बारे में जानते हैं, और परमेश्वर ने हमें छीन लिया।

मेरा मतलब है, उसने हमें बचाया। उसने हमें मौत के मुँह से छुड़ाया। केवल ईश्वरीय हस्तक्षेप ही उसे बचा सकता था।

देखिए, मसीही जीवन में दुख आकस्मिक या आकस्मिक नहीं है। अब, हम पौलुस की परेशानी की सही प्रकृति नहीं जानते।

संभवतः किसी प्रकार का उत्पीड़न या शारीरिक कष्ट ही था जिसने मिशनरी के रूप में उनके काम को कठिन बना दिया। कम से कम पाँच सुझाव दिए गए हैं। कम से कम पाँच सुझाव।

पहला, 1 कुरिन्थियों अध्याय 15, श्लोक 32, जहाँ पौलुस कहता है कि हमने इफिसुस में जंगली जानवरों से लड़ाई की। दूसरे में, यहूदी अदालत में पेश किए जाने के बाद उसे 39 कोड़े मारे गए। आप जानते हैं, एक यहूदी को आप अधिकतम 40 कोड़े ही दे सकते थे।

पाँच बार इस स्थिति से गुज़रा हूँ। पाँच बार।

उसे पाँच बार पीटा गया। आप जानते हैं, जब मैं 1 कुरिन्थियों को पढ़ाता हूँ, या जब मैं पॉल के पत्रों को पढ़ाता हूँ, तो मेरे पास पॉल का बायोडाटा होता है, और मैं बायोडाटा तैयार करता हूँ, और मैं पूछता हूँ, अच्छा, क्या आप इस पादरी को काम पर रखना चाहते हैं? फिर मैं आपको पॉल का बायोडाटा बताता हूँ। वह खुद को क्या कहता है? वह खुद को जेल में बंद एक कैदी कहता है।

वह फोन करता है, क्या? उसने कहा कि मैं सो नहीं सकता। और फिर उसने कहा, अंदर से पीड़ित, बाहर से पीड़ित, इस खतरे में, उस खतरे में। और मैंने पाया कि मेरे छात्र आमतौर पर पॉल को काम पर नहीं रखना चाहते।

मेरा मतलब है, कौन किसी ऐसे व्यक्ति को काम पर रखेगा जो जेल में है और बाहर है? कौन किसी ऐसे व्यक्ति को काम पर रखना चाहेगा जो इतना अच्छा है कि उसे पाँच बार पीटा जाए, 39 कोड़े मारे जाएँ? वह इतना महान था। और फिर कोई ऐसा व्यक्ति जो दंगे भड़काता है। अधिनियमों के अध्याय 19 में, मेरा मतलब है, वह ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने दंगे भड़काए, लेकिन वहाँ उसकी उपस्थिति ने दंगे भड़काए।

क्या आप उस व्यक्ति को अपना पादरी बनाना चाहते हैं? हम ठीक से नहीं जानते कि उसने क्या सहा, लेकिन ये प्रेरितों के काम अध्याय 20, आयत 19 में त्रोआस छोड़ने से कुछ समय पहले एक विशेष उत्पीड़न के संकेत हैं। दूसरे लोग कहेंगे कि उसे बार-बार होने वाली शारीरिक बीमारी थी। सच्चाई यह है कि हम नहीं जानते।

यह सब हो सकता है, यह इनमें से एक हो सकता है, यह इनमें से दो हो सकता है, लेकिन कम से कम हम जानते थे कि वह पीड़ित था। उसे प्रताड़ित किया गया और यह सब। पॉल और उसके

साथियों ने जो भी समस्या का सामना किया, वह बुरी थी। उन्होंने कहा कि वे हद से ज़्यादा बोझिल थे, ताकत से ज़्यादा, यहाँ तक कि जीवन से भी निराश थे।

इस समस्या के कारण, पॉल को मृत्यु की आशंका के साथ जीना पड़ा, जो कभी भी हो सकती थी। आप जानते हैं, कभी-कभी, हमें हमेशा अपना जीवन इसी तरह जीना चाहिए। हमें अपना जीवन जीना है; मैं इसे इस तरह से कहता हूँ: हमें अपना जीवन अनंत काल के प्रकाश में जीना चाहिए, और हम नहीं जानते कि वह अनंत काल कब शुरू होता है।

लेकिन हमें अपना जीवन भविष्य के प्रकाश में जीना चाहिए। ग्लोवर ने जिस तरह से वर्णन किया है, उसके विपरीत, उन्होंने कहा कि ईसाई वे लोग हैं जो भविष्य के लिए जीते हैं। मेरा मतलब है, हम भविष्य के लिए इस अर्थ में जीते हैं कि हम जानते हैं कि हम एक बेहतर जगह पर जा रहे हैं। हम भविष्य और प्रत्याशा के लिए जीते हैं।

हालाँकि, श्लोक 10 को देखें। मेरा मतलब है, एक व्यक्ति जो इन सब से गुज़र रहा है, मैं आपको श्लोक 10 फिर से पढ़ना चाहता हूँ। जिसने हमें इतने घातक संकट से बचाया है, वह हमें बचाना जारी रखेगा, और उस पर, हमने अपनी आशा रखी है कि वह हमें फिर से बचाएगा।

आप जानते हैं, आप अतीत, वर्तमान और भविष्य को देखते हैं। उसने हमें बचाया, वह हमें बचा रहा है, और अगर कल फिर से मुसीबत आती है, तो हमें भरोसा है कि वह हमें बचाएगा। और यह उद्धार और पॉल की योजना की तरह दिखता है।

आम तौर पर, पौलुस इस बारे में बात करता है कि हम कैसे बचाए गए हैं, हम बचाए जा रहे हैं, और हम बचाए जाएँगे। तो, उद्धार के ये तीन पहलू हैं। उसने कहा कि उसने हमें बचाया है, और हमें भरोसा है कि वह हमें बचाएगा, और अगर भविष्य में हमें परेशानी होती है, तो वह हमें बचाएगा।

मैं उम्मीद बिल्कुल नहीं छोड़ रहा हूँ। मेरा मतलब है, पॉल एक ऐसा व्यक्ति था जो बहुत आशावान था, और उसकी आशा परमेश्वर पर थी। देखिए, पॉल कहता है कि हमें परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के उद्धार में पौलुस का भरोसा केवल उसके व्यक्तिगत विश्वास पर आधारित नहीं था। अब इसे सुनिए। यह दूसरों की मध्यस्थता वाली प्रार्थनाओं से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, पॉल एक व्यक्तिवादी या अकेले काम करने वाला पादरी नहीं था। इसलिए वह विश्वासियों से कह सकता था, हमारे लिए प्रार्थना करो, हमारे लिए प्रार्थना करो। आप जानते हैं, आज हमारे ज़्यादातर प्रचारक मण्डली के सदस्यों से यह नहीं कहते कि हमारे लिए प्रार्थना करो, और अगर वे कहते हैं कि हमारे लिए प्रार्थना करो, तो यह गपशप का विषय बन जाता है।

वे कहते हैं, ठीक है, हमारे लिए प्रार्थना करो। पादरी ने कहा कि हमें उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। क्या उसे पारिवारिक परेशानी है? क्या उसके बच्चों को कोई समस्या है? क्या वह

आर्थिक रूप से दिवालिया हो रहा है? उसने कहा कि हमारे लिए प्रार्थना करो, लेकिन पॉल और इसलिए पादरी कभी किसी के सामने अपनी बात नहीं रखते।

वे कभी नहीं कहते कि हमारे लिए प्रार्थना करो क्योंकि यह गपशप का विषय बन जाता है, लेकिन पॉल कमजोर होने के लिए तैयार था और कहता था, यह मेरी समस्या है। हमारे लिए प्रार्थना करो, और मैं चाहता हूँ कि तुम इसी के लिए प्रार्थना करो। वह अकेले ही सब कुछ करने वाला पादरी नहीं था। उसने कभी भी सेवकाई में सुपरमैन की तरह काम नहीं किया।

उसने न केवल इसके लिए निवेदन किया, बल्कि उसने कई लोगों की प्रार्थनाओं पर भरोसा किया। आप देखिए, जब कुरिन्थ के मसीही पौलुस के लिए प्रार्थना कर रहे थे, तो वे वास्तव में उसकी मदद कर रहे थे। उसे मध्यस्थों की ज़रूरत थी।

हम अक्सर उन महान कार्यों के बारे में सोचते हैं जो परमेश्वर ने पौलुस के माध्यम से किए, और हम उसे परमेश्वर के एक आदमी के रूप में उचित रूप से सराहते हैं, लेकिन क्या हम उन सभी लोगों के बारे में सोचते हैं जिन्होंने उसके लिए प्रार्थना की? पौलुस ने सेवकाई में अपनी प्रभावशीलता का श्रेय उन्हें दिया। अब, आइए आयत 12 से 14 पर जाएँ। यहाँ, पौलुस अपनी ईमानदारी का बचाव करना शुरू करता है।

वास्तव में, यह हमारा घमण्ड है, हमारे विवेक की गवाही है। हमने संसार में सच्चाई और ईश्वरीय ईमानदारी के साथ व्यवहार किया है, सांसारिक ज्ञान से नहीं, बल्कि ईश्वर के अनुग्रह से और विशेष रूप से तुम्हारे प्रति। क्योंकि हम तुम्हें केवल वही लिखते हैं जो तुम पढ़ और समझ सकते हो।

मुझे उम्मीद है कि आप अंत तक समझेंगे, जैसा कि आप पहले से ही हमें आंशिक रूप से समझ चुके हैं, कि प्रभु यीशु के दिन, हम आपके गौरव हैं, जैसे कि आप हमारे गौरव हैं। आप देखिए, कोरिंथियन मसीही शायद ऐसे मंत्रियों से निपटने के आदी थे जो बहुत ही गणनात्मक और चालाक थे, और उन्होंने अनुमान लगाया या सोचा कि पॉल भी उसी तरह का होगा। आप जानते हैं, 1 कुरिन्थियों अध्याय 16, श्लोक 5 में, पॉल ने पहले ही उन्हें बता दिया था कि वह आ रहा है, लेकिन वह नहीं दिखा।

और वह नहीं आया, इसलिए उन्होंने सोचा कि, ठीक है, वह उन्हें बरगला रहा होगा। अगर वह नहीं आया, तो समस्या क्या थी? क्या हम उस पर भरोसा कर सकते हैं? अगर यह आदमी कहता है कि वह आ रहा है और वह नहीं आता है, तो हमें उससे समस्या है। लेकिन पॉल कहता है, नहीं, तुम गलत हो, मैं ऐसा नहीं हूँ।

उन्होंने उसे डांटा। उन्होंने उसे डांटा क्योंकि उन्होंने कहा कि वह नहीं आ रहा है। वह दावा करता है कि वह बेशर्म है।

आप देखिए, पौलुस यहाँ पद 12 से 14 में दो समस्याओं से निपटता है। सामान्य आरोप। पहला, उसने ईमानदारी के बिना बेशर्मी से काम किया।

और इसीलिए आप श्लोक 12 में उत्तर देख सकते हैं। और फिर उन्होंने कहा कि वह निष्ठाहीन था और अपने पत्रों में उसने सांसारिक चतुराई दिखाई थी क्योंकि वह एक बात लिखकर और दूसरा अर्थ निकालकर टाल-मटोल कर रहा था। अब श्लोक 13 को देखें।

क्योंकि हम तुम्हें सिर्फ वही लिखते हैं जो तुम पढ़ सकते हो और समझ भी सकते हो। मुझे उम्मीद है कि तुम अंत तक समझ जाओगे। अब मेरी बात ध्यान से सुनो।

पॉल की चिट्ठियाँ सिर्फ एक टेलीफोन वार्तालाप का एक छोर हैं। हम सुनते हैं कि पॉल क्या कह रहा है। हम नहीं सुनते कि कुरिन्थियों क्या कह रहे हैं।

कुरिन्थियों की बातें जानने का एकमात्र तरीका है पौलुस का उत्तर सुनना। इसलिए, पौलुस का उत्तर सुनकर कहें, ठीक है, यही हो रहा है। और यही बात आपको आयत 12 और 13 में मिलती है।

वास्तव में, यह हमारा घमंड है, हमारे विवेक की गवाही है। हमने दुनिया में खुलेपन और ईश्वरीय ईमानदारी के साथ व्यवहार किया है। आप देखिए, उस आयत में, थोड़ी सी पाठ्य समस्या है।

कुछ लोग *aplotety* लेते हैं या कुछ लोग *hagiotēs* लेते हैं। मैं इस जगह *hagiotēs* लेता हूँ, ईश्वरीयता के बारे में बात करता हूँ। ईश्वरीयता में, हम आपके पास आए हैं।

हमने संसार में ईमानदारी और ईश्वरीय ईमानदारी के साथ व्यवहार किया है, सांसारिक बुद्धि से नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा से, सब कुछ आपके प्रति, जिसका अर्थ है कि पॉल के खिलाफ दो आरोप थे। नंबर एक, सामान्य आरोप, उसने बेशर्मी से काम किया। नंबर दो है पत्र जो आप समझ नहीं सकते।

वह पत्र में एक बात कहता है, और दूसरी करता है। और पौलुस कहता है, नहीं, ये निराधार आरोप थे जिनका उत्तर पौलुस को अपने लिए संभव एकमात्र तरीके से देना था। वह इसका उत्तर कैसे दे सकता था? अपने विवेक की गवाही और अपने आचरण के बारे में कुरिन्थियों के ज्ञान का हवाला देकर।

इसलिए, वह दावा करता है कि चर्च और दुनिया दोनों में, उसके आचरण की विशेषता यह है कि परमेश्वर ने उसे इरादे की शुद्धता और उसके पत्राचार में खुलापन दिया है। क्या मेरा इरादा सही है? और आपके साथ मेरा पत्राचार बहुत स्पष्ट है। आप देखिए, कुरिन्थियों को पहले ही उससे कम से कम तीन पत्र मिल चुके हैं।

मेरा मतलब है, उन्हें पहले ही तीन पत्र मिल चुके हैं, और अब वह उनसे कह रहा है, आप समझिए, मैं आपको सिर्फ वही लिख रहा हूँ जो आप पढ़ और समझ सकते हैं। इसलिए पॉल उनसे कह रहा है, वह इस बात पर कायम है कि उसने और उसके साथियों ने दुनिया के सामने और खास तौर पर ईसाइयों के सामने पवित्रता से व्यवहार किया है, और यह महत्वपूर्ण है - और ईश्वरीय ईमानदारी, शारीरिक ज्ञान में नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा में।

आप देखिए, आप जानते हैं कि पॉल क्या कह रहा है? मैं गिरगिट की तरह रंग नहीं बदलता। आप जो देखते हैं, वही पाते हैं। मैं गिरगिट की तरह का ईसाई नहीं हूँ जो अपने साथ जुड़े लोगों की नैतिक और आध्यात्मिक प्रवृत्तियों के अनुसार खुद को ढाल लेता है।

तो यहाँ, आप जानते हैं, लोग हमेशा कहते हैं, जब आप रोम में होते हैं, तो आप रोमन की तरह व्यवहार करते हैं। जब आप रोम में होते हैं, तो रोमनों की तरह व्यवहार करें। फिर, जब आप कहीं और होते हैं, तो नहीं, वह पॉल नहीं है।

उनका जीवन सुसंगत था। पवित्रता का जीवन सुसंगत ईमानदारी का जीवन है, जिसका अर्थ है कि आप जो कहते हैं और जो आप कहना चाहते हैं, वही कहते हैं, और अपने वचन पर अड़े रहते हैं। और पॉल कहते हैं, मैं बिल्कुल वैसा ही व्यक्ति हूँ।

आप इसे पद 12 से 14 में देख सकते हैं। उसने कहा, जैसा कि तुम पहले ही हमें आंशिक रूप से समझ चुके हो, कि प्रभु यीशु के दिन, हम तुम्हारे घमण्ड हैं, वैसे ही जैसे तुम हमारे घमण्ड हो। इसलिए पौलुस दावा करता है कि चर्च और दुनिया दोनों में, उसके आचरण की विशेषता ईश्वर-प्रदत्त इरादे की शुद्धता और खुलेपन से थी।

और उसका जीवन ईश्वर की कृपा से संचालित था। फिर वह दावा करता है कि उसके किसी भी पत्र-व्यवहार में उसका अर्थ केवल पंक्तियों के बीच पढ़ने से स्पष्ट नहीं होता। जब पॉल बात करता है, तो आपको पंक्तियों के बीच पढ़ने की ज़रूरत नहीं होती, इसे समझने की कोशिश नहीं करनी पड़ती।

आप जानते हैं, कई मंत्री, आपको उन्हें समझना होगा। वे वास्तव में क्या कह रहे हैं? मुझे यकीन नहीं है कि मैं इसे समझ पा रहा हूँ। अगर वे कहते हैं कि आओ, तो यह जाने की संभावना है।

अगर वे कहते हैं कि जाओ, अगर वे कहते हैं कि आगे बढ़ो, तो तुम मुझसे आगे मिलो, बेहतर होगा कि तुम पीछे चले जाओ क्योंकि वे पीछे जा रहे हैं। इसलिए, आपको पंक्तियों के बीच पढ़ना चाहिए। लेकिन पॉल कहते हैं, जब बात मेरी आती है, तो आपको पंक्तियों के बीच पढ़ने की ज़रूरत नहीं है।

बल्कि, उनके पत्रों का अर्थ, जो सतह पर था, उसे केवल पढ़कर ही समझा जा सकता था। पौलुस ने कुरिन्थ में अपने धर्मातरित लोगों को याद दिलाते हुए निष्कर्ष निकाला कि वे पहले से ही उसके उद्देश्यों और इरादों की सराहना करने लगे थे, खासकर तीतुस की हाल की यात्रा के माध्यम से। वह आशा व्यक्त करता है कि वे पूर्ण आश्वासन तक पहुँचेंगे कि वह उन्हें अभी उतना ही गर्व का कारण दे सकता है जितना वे हमारे प्रभु यीशु के दिन में उसे गर्व का कारण देंगे।

इसके बाद पौलुस कुरिन्थियों के सामने आने वाली अगली समस्या के बारे में बात करता है, जो है यात्रा की योजना में बदलाव। यही कठिनाई है। यात्रा की योजना में बदलाव।

पद 15 से 17 में, चूँकि मुझे इस बात का यकीन था, इसलिए मैं पहले तुम्हारे पास आना चाहता था ताकि तुम पर दुगना उपकार हो सके। मैं पहले तुम्हारे पास आना चाहता था ताकि तुम पर दुगना उपकार हो सके। मेरा मतलब है, पुराने राजा जेम्स ने इसे दोहरे आशीर्वाद के रूप में बताया है।

अब, मैं आपको उस दोहरे आशीर्वाद के बारे में एक छोटी सी कहानी बताता हूँ। मैं कई साल पहले अपनी टीएचएम कक्षा में था, और उस समय 2 कुरिन्थियों में मेरे शिक्षक, कॉलिन कूज़, उस स्थान पर पहुँचे, और उन्होंने कहा, ठीक है, दोहरे आशीर्वाद ने कहा, यहाँ वेस्लेयन गलत हैं। कि पॉल संपूर्ण पवित्रीकरण के दोहरे आशीर्वाद के बारे में बात नहीं कर रहा है।

और वाह, ऐसा लगता है जैसे मेरा सिर फट गया क्योंकि मैं एक वेस्लेयन हूँ, मैं एक मेथोडिस्ट हूँ, और यह उन आयतों में से एक है जिसे हमने मोक्ष के बाद अनुग्रह के दूसरे चरण के रूप में पवित्रता के लिए दोहरे आशीर्वाद के रूप में धारण किया है। और यह बस, ऐसा है जैसे किसी ने अभी-अभी, आप सीढ़ी चढ़ रहे हैं, और किसी ने आपके नीचे से सीढ़ी खींच ली, और आप नीचे गिर गए और दुर्घटनाग्रस्त हो गए। मुझे बुरा लगा, और मुझे यकीन है कि अगर आप हैं तो आप भी बुरा मानेंगे।

मैं इसलिए नाराज़ था क्योंकि मैंने जो चीज़ें पकड़ी थीं, उनमें से एक चीज़ मुझसे दूर होती जा रही थी। लेकिन मैं आपको बता दूँ कि इसने मेरे लिए क्या किया। मैंने उस क्लास में मन बना लिया था कि अगर भगवान ने कभी मुझे पीएचडी करने में मदद की, तो मैं पवित्रीकरण पर ही पीएचडी करूँगा।

सिर्फ़ उस क्लास की वजह से, सिर्फ़ उस श्लोक की वजह से, मैंने कहा, ठीक है, जो कहा गया था, और वास्तव में प्रभु ने मेरी मदद की, मैं आगे बढ़ा, मैंने पीएचडी की, मैंने इसे पवित्रीकरण पर किया, और जब मैंने इसे पूरा किया और पास हुआ, तो मैंने डॉ. कॉलिन कूज़ को एक पत्र लिखा, और मैंने कहा, ठीक है, आप बेहतर हैं, शायद आप मुझे फिर से याद न करें। मैं आपका छात्र था। आपने इस क्लास में यही कहा, और यह मेरे लिए पवित्रीकरण में अपने विश्वास पर आगे अध्ययन करने की प्रेरणा बन गया, और अब मेरे पास पीएचडी है।

और उसने मुझे एक अनुग्रहपूर्ण पत्र लिखा। तो यह उस आयत के बारे में मेरी कहानी है। तो, वह सही था कि पौलुस यहाँ पवित्रीकरण के दोहरे आशीर्वाद के बारे में बात नहीं कर रहा है।

अब, यह नष्ट नहीं होता है, और मेरा पवित्रीकरण दूसरे कुरिन्थियों 11:5 के साथ बढ़ता या घटता नहीं है। कम से कम अब मैं बहुत बेहतर जानता हूँ। लेकिन पॉल कहता है, मैं फिर से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ ताकि मेरी दूसरी बार की यात्रा तुम्हें खुशी दे।

यह दोहरा आशीर्वाद है, शुद्ध और सरल। यही वह कह रहा है। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ।

मैं मकिदुनिया जाते समय आपसे मिलना चाहता था और मकिदुनिया से वापस आपके पास आना चाहता था। क्या आपने मुझे यहूदिया भेजा है? जब मैं ऐसा करना चाहता था तो क्या मैं झिझक रहा था? क्या मैं सामान्य मानवीय मानकों के अनुसार योजनाएँ बनाता हूँ, हाँ, हाँ और नहीं, नहीं

कहने के लिए तैयार रहता हूँ? थोड़ी देर के लिए वहाँ रुकें। इफिसुस छोड़ने के बाद पौलुस ने दो बार कुरिन्थ जाने की योजना बनाई थी।

मकिदुनिया की अपनी यात्रा पर और यहूदिया जाने से पहले अपनी वापसी पर। आप इसे आयत 15 और 16 में देख सकते हैं। हालाँकि, कुछ कारणों से, जिन्हें वह बाद में समझाता है, वह सीधे कुरिन्थ नहीं गया।

उन्होंने बाद में इस बारे में बताया। वे सीधे कुरिन्थ नहीं गए, बल्कि पहले मैसेडोनिया गए। सोचिए क्या हुआ? उनके विरोधियों और दुश्मनों ने इस बात का फायदा उठाया और कहा कि उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

उन्होंने उस पर चंचलता और अविश्वसनीयता का आरोप लगाया। यह दिलचस्प है। उन्होंने एक ग्रीक शब्द, एलाफ्रिया का इस्तेमाल किया।

एलाफ्रिया का मतलब है हल्का। वह हल्का है। वह चंचल है।

आप देखिए, उन्होंने उस पर दुलमुल, मनमौजी दुलमुल और चरित्रहीनता का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि आप इस आदमी पर भरोसा नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि यात्रा की योजनाओं में उसके मनमाने बदलाव, विशुद्ध स्वार्थ से प्रेरित थे और उन्हें टूटे हुए वादों या कोरिंथ की जरूरतों की कोई चिंता नहीं थी।

उन्होंने कहा कि यह आदमी ऐसा करता है; वह सिर्फ वादे करता है। वादा करना और तोड़ना दोनों ही होता है। और आप जानते हैं, आजकल यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोग वादे तोड़ने के लिए भी वादे करते हैं।

और कुरिन्थियों ने शायद इसका अनुभव किया है। इसलिए, उन्होंने पॉल की आलोचना एक ऐसे व्यक्ति के रूप में की जो किसी योजना पर निर्णय नहीं ले सकता था या जो किसी योजना को पूरा नहीं कर सकता था। उन्होंने पॉल की यात्रा योजनाओं में बदलाव को भी कम होते स्नेह के बराबर बताया।

उन्होंने कहा कि वह हमसे प्यार नहीं करता। पद 17: क्या मैं जब यह करना चाहता था, तो झिझक रहा था? क्या मैं अपनी योजनाएँ सामान्य मानवीय मानकों के अनुसार बनाता हूँ, हाँ और नहीं, एक ही समय में नहीं कहने के लिए तैयार रहता हूँ? लेकिन वे गलत थे। वे पौलुस को दोषी ठहराने की कोशिश में गलत थे।

आप देखिए, उनका निराश होना गलत नहीं था। मेरा मतलब है, क्योंकि उसने उनसे कहा था कि वह आ रहा है। तो स्वाभाविक रूप से, उन्हें निराश होना चाहिए।

यह बात समझ में आती है। लेकिन वे गलत थे क्योंकि वे पौलुस के दिल को नहीं जानते थे, और वे उसकी परिस्थितियों को नहीं जानते थे। यह हमारे लिए एक सबक है जिसे हम यहीं सीख सकते हैं।

हमें लोगों के इरादों पर सवाल उठाने में बहुत धीमी गति से काम करना चाहिए। आम तौर पर, हम इरादों पर सवाल उठाने में बहुत अच्छे होते हैं। हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि, ठीक है, ये लोग जिम्मेदार नहीं हैं।

आप देखिए, इस बारे में सोचें: अगर आप पादरी हैं और कोई आपके चर्च में देर से आता है। और फिर जब वह व्यक्ति अंदर आता है, तो आप कहते हैं, आप में से जो लोग चर्च में देर से आते हैं, आप गंभीर नहीं हैं, आप ईश्वर के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं, और आप यह सब कहते हैं। लेकिन आप नहीं जानते कि चर्च में आने से पहले एक व्यक्ति ने किस संघर्ष और संघर्ष से गुज़रा है।

उस सुबह, वह आना नहीं चाहता था। और शैतान ने उसे वापस लाने के लिए हर संभव कोशिश की। उसने कपड़े पहने, वह बैठ गया, उसने कपड़े पहने, वह बैठ गया।

लेकिन आखिरकार, मैं चर्च जा रहा हूँ। भले ही मैं देर से आ रहा हूँ, मैं चर्च जा रहा हूँ। और इसलिए, उसने जीत हासिल की।

वह चर्च आया, लेकिन वह देर से आया। लेकिन यहाँ आप एक पादरी के रूप में हैं, जैसे ही वह व्यक्ति आता है, सभी देर से आने वाले और आप देर से आने वाले, आप स्वर्ग जाने के लिए तैयार नहीं हैं। और शैतान कहता है, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मत जाओ? अब तुम आए, तुम देर से आए।

क्या आपने अभी नहीं सुना कि आप स्वर्ग नहीं जा रहे हैं? और फिर निराशा शुरू हो जाती है। हमें अपने उद्देश्यों का पीछा करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए। हमें सभी उत्तर जानने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले हमें सभी विवरण जानने की आवश्यकता है। हम बहुत जल्दी निष्कर्ष पर पहुँच जाते हैं। मेरा मतलब है, यह इस्राएल के बच्चों की तरह है, जब आप यहोशू की पुस्तक पढ़ते हैं, और उनके पास परमेश्वर और रूबेन का गोत्र है, रूबेन और परमेश्वर का गोत्र है, और मनश्शे का गोत्र है, जो एक वेदी बनाने गया था, और इस्राएल के बच्चों को पता नहीं था।

और वे उनसे लड़ने और उन्हें मारने के लिए तैयार थे क्योंकि उन्हें लगा कि उन्होंने उनके साथ विश्वासघात किया है। और जब वे जाते हैं, तो वे कहते हैं, सुनो, हमने यह वेदी भगवान को धूप जलाने के लिए नहीं बनाई है, बल्कि हमने यह वेदी इसलिए बनाई है ताकि जब हमारे बच्चे हमसे पूछें, तो हम उन्हें बता सकें। अगर वे हमसे पूछें कि हमारे और आपके बीच क्या संबंध है, तो हम उन्हें बता सकेंगे कि यह उस चीज़ का प्रतीक है जो यहाँ है और जो आपकी होगी।

और परमेश्वर ने उन्हें अपने भाइयों को मारने से रोका। दूसरे शब्दों में, इरादों पर संदेह करने से पहले बहुत सावधान रहें। और कुरिन्थियों ने इसे नहीं समझा।

इसलिए, उन्होंने आगे बढ़कर पॉल को दोषी ठहराया। बेशक, वे निराश थे, और उनका निराश होना सही था, लेकिन निराशा के लिए पॉल को दोषी ठहराना गलत था। उन्हें परिस्थितियों में पॉल के दिल और परमेश्वर के हाथ को देखने की ज़रूरत थी।

और फिर आप श्लोक 18 से देखते हैं, जैसे कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, मैं तुमसे चाहता हूँ हाँ और नहीं नहीं है। पॉल कहता है, मैं तुमसे चाहता हूँ। पॉल इस आरोप से इतना व्यथित है कि वह आश्चर्य है; उसने कोशिश की, वह अपनी बेगुनाही के बारे में आश्चर्य था कि वह गंभीरता से परमेश्वर की निर्विवाद विश्वसनीयता का आह्वान करता है। और यहीं पर ईमानदारी आती है।

वह अपनी विश्वसनीयता के लिए दो तर्क प्रस्तुत करके अपनी विश्वसनीयता का बचाव करता है। और उसने अपनी योजनाओं को बदलने के लिए दो कारण बताए। उसका पहला तर्क यह है कि मसीह की उसकी सेवकाई के लिए उसे विश्वसनीय होना आवश्यक है।

वह ज़ोर देकर कहता है कि उसका वचन, उसका परिवर्तन, उसकी योजना का कथन और उसका संदेश एक ही समय में हाँ और नहीं नहीं थे। वह परमेश्वर की वफ़ादारी की अपील करके इस घोषणा का समर्थन करता है। पौलुस परमेश्वर की वफ़ादारी की अपील करता है।

वह कौन व्यक्ति है जिसके बारे में आप इतने आश्चर्य हैं, हाँ, खुद के बारे में, कि आप अपनी ईमानदारी को परमेश्वर की ईमानदारी से जोड़ सकते हैं? यही पौलुस ने किया। उसने अपनी व्यक्तिगत ईमानदारी को परमेश्वर की ईमानदारी से जोड़ा। मेरा मतलब है, यह बहुत शक्तिशाली है।

और वह बहुत परेशान है। उन्होंने कहा, न तो उन्हें खुशखबरी सुनाते समय और न ही अपनी परेशान करने वाली योजनाओं के बारे में बताते समय उनकी भाषा में हाँ और नहीं का अस्पष्ट मिश्रण था। वह एक ही समय में हाँ और नहीं नहीं कहते हैं।

नहीं। वह हमारे जैसे मुंह से दोनों तरफ से नहीं बोलता। बिल्कुल नहीं।

उसका संदेश हाँ या ना था। वह जानता है कि वह क्या कर रहा है। एक वफ़ादार परमेश्वर का संदेशवाहक कैसे एक आश्चर्य करने वाली हाँ और एक विचलित करने वाली ना के बीच झूल सकता है? या ऐसा संदेश दे सकता है जो एक जोरदार हाँ न हो? इसलिए पॉल विस्तार से बताना शुरू करता है।

वह उन्हें बताना शुरू करता है। वह परमेश्वर की वफ़ादारी की अपील करता है। यह कहना दुखद है कि जिस दुनिया में हम अब रह रहे हैं, उसमें शब्दों का कोई महत्व नहीं है।

राजनेता आसानी से बदल जाते हैं। आज उन्होंने कुछ वादा किया और कल वह वादा खत्म हो जाएगा। वे भूल जाते हैं।

वे पदभार ग्रहण करने के बाद अपने अभियान की प्रतिबद्धताओं से पीछे हट जाते हैं। और लोग न्यायालय में सत्य बोलने की शपथ लेते हैं, सत्य के अलावा कुछ नहीं, और फिर भी वे झूठ बोल रहे हैं। बाइबिल पर हाथ रखें, और आप सत्य बोलेंगे, सत्य के अलावा कुछ नहीं।

और वे इसे बेबाकी से कहते हैं। हम मंत्रालय में ऐसा नहीं कर सकते। कुछ लोग आत्मरक्षा के लिए झूठ का सहारा लेते हैं।

ऐसा लगता है कि बहुत से लोगों के लिए वादे बस तोड़ने के लिए किए जाते हैं, लेकिन पौलुस के लिए ऐसा नहीं था। यह जानना मुश्किल है कि हम किस पर भरोसा कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर के वादे उसके चरित्र को प्रकट करते हैं। परमेश्वर के वादे उसके चरित्र को प्रकट करते हैं।

परमेश्वर अपनी हर प्रतिबद्धता को पूरा करता है। परमेश्वर का पुत्र जिसका प्रचार पौलुस और उसके साथियों ने कुरिन्थियों के बीच किया, जिसे इन विश्वासियों ने स्वीकार किया, वह एक ही समय में हाँ और ना नहीं था, बल्कि एक जोरदार हाँ था। आप जानते हैं, हम उस अंश को एक वादे के रूप में उद्धृत करने का प्रयास करते हैं।

परमेश्वर का वचन हाँ और आमीन है। खैर, इसे संदर्भ में देखें। संदर्भ में, पौलुस सिर्फ परमेश्वर की अखंडता से जुड़ी अपनी अखंडता के बारे में बात नहीं कर रहा है; वह अपनी खुद की अखंडता के बारे में बात कर रहा है।

उसकी अपनी ईमानदारी परमेश्वर की अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने में उसकी वफ़ादारी से जुड़ी हुई है। और पौलुस कहता है, तुम्हारा उद्धार और तुम्हारा परिणाम, तुम्हारा क्रमिक आध्यात्मिक अनुभव यह साबित करता है कि मसीह और उसके कार्य का सकारात्मक चरित्र प्रेरित के लिए इतना ज्वलंत था कि यह उसके अपने जीवन और सेवकाई में व्याप्त था। आप जानते हैं क्या? पौलुस भरोसेमंद था।

पौलुस पर भरोसा किया जा सकता था। उसकी विश्वसनीयता के लिए उसका दूसरा तर्क यह है कि वह कुरिन्थियों और अपने जीवन में परमेश्वर के काम के बारे में जानता है। आप देख सकते हैं कि आयत 21 और 22 में, वह इस बात पर ध्यान आकर्षित करता है कि परमेश्वर अब उनके साथ क्या कर रहा है और उनके धर्म परिवर्तन के समय परमेश्वर ने क्या किया।

वर्तमान समय में, परमेश्वर उन्हें स्थापित कर रहा है। आप देख सकते हैं कि पद 21 में, वह कहता है, परन्तु परमेश्वर ही है जो हमें मसीह में तुम्हारे साथ स्थापित करता है और हमें अभिषेक करता है। फिर पौलुस कई बातों का वर्णन करता है जो पवित्र आत्मा विश्वासियों के जीवन में करता है।

पद 21 और 22 को देखें। लेकिन यह परमेश्वर ही है जो हमें मसीह में तुम्हारे साथ स्थापित करता है और हम पर मुहर लगाकर और हमारे हृदयों में पहली किस्त के रूप में आत्मा देकर हमारा अभिषेक करता है। पवित्र आत्मा विश्वासियों को ईसाई जीवन और सेवा के लिए अभिषेक और सशक्त बनाता है।

पवित्र आत्मा हमें मुहर भी लगाता है और हमारा बंधन भी है; मुहर, जैसा कि शब्द से पता चलता है, स्वामित्व का चिह्न है। हम उसके हैं। इसके अलावा, पवित्र आत्मा भविष्य की आशीषों की प्रतिज्ञा या गारंटी बन जाती है जो इस जीवन से परे हैं।

आप देखिए, पौलुस को इन ईश्वरीय कार्यों के बारे में जानकारी थी, जिसके कारण वह विश्वसनीय था। सुसमाचार के वादे को पूरा करने में मसीह की विश्वसनीयता और अपने लोगों के जीवन में परमेश्वर के कार्य में उसकी विश्वासयोग्यता ने प्रेरितों के चरित्र को आकार दिया। वे हमारे चरित्र को भी आकार देते हैं।

जब हम उनके महत्व पर विचार करते हैं, तो पौलुस अपनी योजना को बदलने के दो कारण बताकर अपनी विश्वसनीयता के लिए अपना तर्क पूरा करता है। पद 23 को देखें। हम पर मुहर लगाकर, मैं इसे छोड़ देता हूँ, लेकिन मैं परमेश्वर को अपने विरुद्ध साक्षी के रूप में बुलाता हूँ।

मैं तुम्हें बचाने के लिए ही कुरिन्थ में फिर से नहीं आया। अब वह उन्हें कारण बताता है। अगर तुम्हें पता होता कि मैं क्यों नहीं आया, तो तुम्हें परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए था।

यह तुम्हारे लिए था। यह तुम्हारे भले के लिए था। क्योंकि अगर मैं आता, तो शायद चीजें वैसी नहीं होतीं जैसी वे हैं।

तुम्हें इसमें मजा नहीं आता। मेरा मतलब है, इसे शाब्दिक रूप से कहें तो। उसने कहा कि मैं अपने खिलाफ भगवान को गवाह के तौर पर बुलाता हूँ।

क्योंकि तुम्हें बचाने के लिए ही मैं फिर से कुरिन्थ नहीं आया। तुम उनके प्रति उसके प्रेम को देख सकते हो। वह उनसे प्रेम करता था।

वह उनकी परवाह करता था। वे अभी भी विश्वास में उसके बच्चे थे, और वह उनके लिए ज़िम्मेदार महसूस करता था। अपनी योजना बदलने का उसका पहला कारण यह था कि वह उन्हें अनुशासन, प्रेरितिक अनुशासन से बचा सके।

वह उन्हें सड़क पर जाने से रोक सकता था। वह उन्हें मौत का दुख देने के बजाय आपस में समस्या सुलझाने का मौका देना चाहता था। वह अपनी बात की पुष्टि शपथ के साथ करता है।

क्योंकि उसके पास अपनी प्रेरणा को साबित करने का कोई तरीका नहीं था। वह बताता है कि उसने यह कदम इसलिए उठाया क्योंकि न तो वह और न ही उसके साथी कोरिंथियन धर्म के स्वामी हैं। क्या यह दिलचस्प नहीं है? दुर्भाग्य से, आज, विशेष रूप से बहुसंख्यक दुनिया में, प्रचारक और मंत्री ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वे अपने सदस्यों के धर्म के स्वामी हों।

बहुसंख्यक दुनिया में, उनकी दुनिया लगभग भगवान के बराबर है, जो कहते हैं, सर, मैं अभी यह नहीं कर सकता। मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ। और मंत्री कहेंगे, ठीक है, मैंने प्रार्थना की है, और मुझे पता है।

तुम्हें प्रार्थना करने की ज़रूरत नहीं है। तुम बस जाओ। नहीं, पॉल ने कहा, नहीं, नहीं, नहीं।

मैं आपकी आस्था पर हावी नहीं हो रहा हूँ। मेरा मतलब है, यह दुखद है। कई मंत्रियों की तरह, मेरा मतलब है, वे भगवान की भूमिका निभाते हैं।

और पॉल कहते हैं कि मैं भगवान की भूमिका नहीं निभाऊंगा। बल्कि, हम आपके आनंद के प्रवर्तक हैं। इसका मतलब है कि उनकी सेवकाई मूल रूप से कुरिन्थियों की आध्यात्मिक भलाई को बढ़ावा देने के लिए है।

इसका मतलब है कि वे अपने विश्वास को मसीह और उसके वचन की ओर निर्देशित करके उनसे और उनकी भलाई से प्रेम करते हैं। पौलुस, एक प्रेरित होने के बावजूद, उनके विश्वास पर हावी नहीं होना चाहता था। ऐसा अधिकार केवल परमेश्वर का है।

आप देखिए, पादरी और ईसाई कार्यकर्ताओं को उस अधिकार को हड़पने के प्रलोभन के बारे में पता होना चाहिए। यह अधिकार ईश्वर का है। यह हमारा नहीं है।

और जैसा कि हम इस अध्याय को देखते हैं, इसे समझना बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। मेरा मतलब है, संक्षेप में, हम यह कहकर शुरू करते हैं कि हमें संत बनने के लिए बुलाया गया है। और हमें अपने उच्च आह्वान पर खरा उतरने की ज़रूरत है, खासकर नैतिक रूप से प्रदूषित वातावरण में जिससे हम आज घिरे हुए हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि हम जीवित संत हैं। हमें परमेश्वर के पवित्र लोग इसलिए कहा जाता है क्योंकि हम उसके हैं और हमारे जीवन में परमेश्वर की झलक दिखनी चाहिए जिसने हमें बुलाया है। फिर, हमें इस बारे में सोचना चाहिए कि हमें कब निर्णय लेना चाहिए।

पॉल हमें बताता है, मैं परमेश्वर के अधीन निर्णय लेता हूँ। जब हम नेतृत्व के पदों पर होते हैं, तो हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि हमारे निर्णय किसी न किसी तरह से दूसरों को प्रभावित करते हैं। और क्योंकि हमारे निर्णय दूसरों को प्रभावित करते हैं, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हम परमेश्वर के अधीन निर्णय लें।

हमने यह भी सीखा है कि एक मसीही कार्यकर्ता के जीवन में ईमानदारी से समझौता नहीं किया जा सकता। और ईमानदारी की कमी सेवकाई को प्रभावित करेगी; चाहे हम इसे जानते हों या नहीं, यह हमें प्रभावित करेगी। फिर हमने परीक्षण के समय में पौलुस के बारे में कुछ सीखा।

उसने इसे खरीदा क्योंकि वह इसका उद्देश्य जानता था। उसके पास पीड़ित मानसिकता नहीं थी, बल्कि वह जानता था कि परमेश्वर उसके जीवन में अपने उद्देश्य और योजना को पूरा कर रहा था। और फिर, आखिरकार, चाहे हम पीड़ित हों या हमें सांत्वना मिले, यह सिर्फ हमारे लिए नहीं है; यह मसीह के शरीर के लिए है।

यह डॉ. अयो अदेवुया द्वारा 2 कुरिन्थियों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2, 2 कुरिन्थियों 1, अभिवादन, प्रार्थना, धन्यवाद, और यात्रा योजनाएँ हैं।